राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

पाठ्यक्रम-

मार्किंग स्कीम

Folk music *Diploma In performing art (F.M.D.P.A.)*

Two year Diploma course

First *year*

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory** Music -Theory	100	33
2	**PRACTICAL-** Demonstration & **viva**	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Second *year*

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory** Music -Theory	100	33
2	**PRACTICAL-** Demonstration & **viva**	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Folk music *Diploma In performing art (F.M.D.P.A.)*

First *year*

लोक शास्त्र

समय : 03 घण्टे **पूर्णांक : 100**

इकाई – 1

1. कार्य कथन और लोक संगीत।
2. लोक संगीत की परिभाषा, परिचय, क्षेत्र एवं विषेषताएं।

इकाई – 2

1. लोक संगीत के अंतर्गत पंडवानी विधा का सामान्य परिचय।
2. तीजन बाई एवं शारदा सिन्हा का परिचय एवं लोक संगीत में योगदान।

इकाई – 3

1. लोक नृत्य एवं लोक गीतों का महत्व, संरक्षण की आवष्यकता।
2. लोकगीत के प्रकारों– चैती, कजरी, दादरा का उपशास्त्रयीय संगीत में स्थान एवं महत्व।

इकाई – 4

1. लोक गीतों के स्वरूप एवं प्रकार यथा –
   (1). संस्कार संबंधी (2). ऋतु संबंधी (3). श्रम सम्बन्धी (4). उत्सव सम्बन्धी
   (5). ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय।
2. लोक संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

इकाई – 5

1. भारत के निम्नलिखित प्रमुख लोक वाद्यों का सामान्य परिचय –
   तर्पा (महाराष्ट्र), चेडा (केरल), पंगु (मणिपुर), नादस्वरम् (कर्नाटक), रवाब (जम्मू कष्मीर), डफ (हरियाणा), डुक्काई (तमिलनाडु), कांसी (पष्चिम बंगाल)।
2. लोक संगीत में वाद्यों का स्थान एवं प्रयोग।

Folk music *Diploma In performing art (F.M.D.P.A.)*

First *year*

प्रायोगिक :- प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 100

1. अलंकार का सामान्य ज्ञान (जिस स्वर या थाट के स्वर उस गीत में लगते हैं उन्हीं थाटों या स्वरों में अलंकार कराना है।)
2. तालों का व्यवहारिक ज्ञान। दादरा कहरवा दीपचन्दी आदि। (लोक गीतों में प्रयोग होने वाले ठेके एवं तालों का ज्ञान)
3. अपने प्रदेष के अंचलों के एक–एक लोक गीतों का निम्नानुसार व्यवहारिक ज्ञान –
   (अ). संस्कार गीत, (ब). ऋतु गीत (स). श्रम गीत (द). उत्सव गीत
   (इ) मनोरंजन गीत
4. सीखी हुई किसी लोक रचना को हार्मोनियम पर बजाकर गाने का अभ्यास।

Folk music *Diploma In performing art (F.M.D.P.A.)*

Second *year*

लोक संगीत शास्त्र

समय : 03 घण्टे **पूर्णांक : 100**

इकाई – 1

1. अपने प्रदेष के संबंधित अंचल के प्रतिनिधि लोक नृत्य, लोक गीत एवं लोक वाद्य का सामान्य परिचय।
2. कार्य कथन और लोक संगीत, लोक संगीत की परिभाषा, परिचय, क्षेत्र एवं विषेषताएं।

इकाई – 2

1. लोक गाथा का सामान्य अध्ययन तथा अंचल की प्रमुख लोक गाथायें।
2 लोकगीत के प्रकारों– चैती, कजरी, दादरा का उपशास्त्रयीय संगीत में स्थान एवं महत्व
3 लोक संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

इकाई – 3

1. लोक नाट्य का सामान्य परिचय एवं लोक नाट्य में निहीत सांगीतिक तत्व।
2. अपने प्रदेष के अंचलों में प्रचलित लोक संगीत एवं लोक संस्कृति का सम्बन्ध निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर –
   (1). गीत, (2). वाद्य, (3). लय व ताल, (4). वेषभूषा व आभूषण, (5). विभिन्न अवसरों के लोक वाद्य

इकाई–4

1. लोक गीतों का फिल्मी गीतों पर प्रभाव एवं लोक नृत्य और योग का सम्बन्ध।
2. तीजन बाई एवं शारदा सिन्हा का परिचय एवं लोक संगीत में योगदान।

इकाई–5

1. भारत के निम्नलिखित प्रमुख लोक वाद्यों का सामान्य परिचय–
   नरसिंघा (हिमाचल), झाझन (गुजरात), पंजाबी ढोलक (पंजाब), काहिल (असम), तूर्य (उत्तर प्रदेष), ढोल (बिहार), गम्मौत (गोवा), तौलिया (राजस्थान), डप्पू (आन्ध्र प्रदेष) तर्पा (महाराष्ट्र), चेडा (केरल), पंगु (मणिपुर), नादस्वरम् (कर्नाटक), रवाब (जम्मू कष्मीर), डफ (हरियाणा), डुक्काई (तमिलनाडु), कांसी (पष्चिम बंगाल)।

2 लोक गीतों के स्वरूप एवं प्रकार यथा –
   (1). संस्कार संबंधी (2). ऋतु संबंधी (3). श्रम सम्बन्धी
   (4). उत्सव सम्बन्धी (5). ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय।

Folk music *Diploma In performing art (F.M.D.P.A.)*

Second *year*

प्रायोगिक :- प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक–100

1 पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं अलंकार का सामान्य ज्ञान (जिस स्वर या थाट के स्वर उस गीत में लगते हैं उन्हीं थाटों या स्वरों में अलंकार कराना है।)

2 तालों का व्यवहारिक ज्ञान। दादरा कहरवा दीपचन्दी आदि। (लोक गीतों में प्रयोग होने वाले ठेके एवं तालों का ज्ञान)

3 अपने प्रदेष के अंचलों के एक–एक लोक गीतों का निम्नानुसार व्यवहारिक ज्ञान –
(अ). संस्कार गीत, (ब). ऋतु गीत (स). श्रम गीत (द). उत्सव गीत (इ) मनोरंजन गीत

4 सीखी हुई किसी लोक रचना को हार्मोनियम पर बजाकर गाने का अभ्यास।

5 अपने प्रदेष के अंचलों के सीखे हुये लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व और लोकगीत तथा शास्त्रीय संगीत से सम्बन्ध।

6 निम्नलिखित भारत के प्रमुख प्रतिनिधि लोकगीतों का अवसर, स्वर पक्ष, प्रयुक्त होने वाले वाद्य, लय व ताल तथा भावार्थ सहित किन्हीं तीन का व्यवहारिक ज्ञान।बुन्देलखण्डी (मध्यप्रदेष), लावणी, पोवाड़ा (महाराष्ट्र), गरबा (गुजरात), विदेषिया (बिहार), भांगड़ा या टप्पा (पंजाब), बादल या भटियाली (पष्चिम बंगाल), बीहू (असम), चैती या कजरी (उत्तर प्रदेष), नाटी या गिद्दा (हिमाचल प्रदेष), उड़िया (उड़ीसा), मणीपुरी (मणिपुर), ओणम (केरल), माथुरी (आन्ध्र प्रदेष), आदि।

7 सीखे हुये लोक गीतों के साथ वाद्यों को बजाने का सामान्य ज्ञान।

8 सीखे हुये किसी भी लोक रचना को स्वरबद्ध करने का अभ्यास।

सन्दर्भ ग्रन्थ की सूची

(1) लोक गीतों की सांस्कृतिक भूमि – श्री विद्याचरण
(2) फोक सांग्स ऑफ इंडिया – श्री हेमाल्स
(3) भारत के लोक नृत्य – श्री लक्ष्मी नारायण
(4) राजस्थान का लोक संगीत – श्री देवीलाल सांभर
(5) मालवा के लोक गीत – डॉ. चिंतामणि उपाध्याय
(6) फोक कल्चर एवं ओरल टेडिरान्स – श्री एस. एल. श्रीवास्तव
(7) भोजपुरी लोक गीत – श्री कृष्ण देव उपाध्याय
(8) मैथली लोक गीतों का अध्ययन – डॉ. तेजनारायण लाल
(9) भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत – डॉ. संजय कुमार सिंह
(10) अवधि लोक गीत और परम्परा – श्री इंद्र प्रकाष पांडे
(11) बुन्देलखण्ड के लोक गीत – डॉ. उमाषंकर शुक्ल
(12) निमाड़ी लोक गीत – डॉ. राम नारायण अग्रवाल
(13) विन्ध्य के आदिवासियों के लोक गीत – श्री चन्द्र जैन
(14) मालवी लोकगीत एवं विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय